बिहार सरकार

INTERNATIONAL DAY FOR BIODIVERSITY 2025

Harmony with nature and sustainable development

पशुधन जैवविविधता

प्रबंधन एवं संरक्षण

बिहार राज्य जैव विविधता पर्षद्

पशुधन जैवविविधता

प्रबंधन एवं संरक्षण

अन्दर के पन्नों में

1. सामान्य संदर्भ
2. पशुधन जैव विविधताः राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य
3. बिहार राज्य में पशुधन जैव विविधता
4. पशुधन जैव विविधता के परिप्रेक्ष्य में सरकारी योजनाएँ
5. सारांश

मूल आलेख :

डॉ० पंकज कुमार,
डॉ० सरोज कुमार रजक,
डॉ० पुष्पेन्द्र कुमार सिंह
प्रसार शिक्षा विभाग
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना

आभार : ICAR&NBAGR, BASU

प्रत्याख्यान

इस बुकलेट में संकलित जानकारी को यथा संभव यथार्थ एवं त्रुटिरहित रखने का प्रयास किया गया है, परन्तु फिर भी संभव है कि कुछ त्रुटियाँ शेष रह जायें। अतः पाठकों से आग्रह है कि इसमें वर्णित तथ्यों के बारे में संशय की स्थिति में सम्बन्धित वैज्ञानिकों, पदाधिकारियों आदि से सम्पर्क कर वास्तविक स्थिति से अवगत हो लें। इसमें किसी प्रकार के दावे या विवाद के लिए पर्षद् या मुद्रक उत्तरदायी नहीं होगा।

पशुधन जैवविविधता
प्रबंधन एवं संरक्षण

1. सामान्य संदर्भ

पशुधन जैव विविधता और आनुवंशिक संसाधन

पशुधन जैव विविधता में पालतू पशुओं की प्रजातियों और उनके बीच आनुवंशिक भिन्नता शामिल है। यह विविधता विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में पशुधन की अनुकूलता और उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। प्रत्येक नस्ल में कुछ न कुछ अद्वितीय गुण होते हैं, जो प्राकृतिक चयन और मानव हस्तक्षेप के माध्यम से विकसित हुए हैं।

उदाहरण के लिए भारत में पूर्णियाँ, गिर और थारपारकर जैसी देशी मवेशी नस्लें विदेशी नस्लों की तुलना में स्थानीय पर्यावरणीय तनावों के प्रति अधिक सहनशील हैं। इन नस्लों में रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी अच्छी होती है। ऐसी कई नस्लें अत्यधिक मौसमीय गर्मी को सहने में भी सक्षम होती हैं। आम-तौर पर इन नस्लों में सहज उपलब्ध स्थानीय खाद्य सामग्री-संसाधनों से प्रभावी पोषण प्राप्त करने की अनुकूलता होती हैं।

पशुधन प्रबंधन में जैव विविधता का महत्व

जैव विविधता प्रकृति की व्यवस्था के स्थायित्व हेतु आवश्यक है। पारिस्थितिक तंत्रों के संतुलन एवं स्थिरता और लचीलापन बनाए रखने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसमें पशुधन प्रबंधन भी शामिल है।

कृषि प्रक्षेत्र में पशुधन की विविधता समस्त कृषि प्रणालियों को विविधता प्रदान करती है। किसी भू-भाग में खेती के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के पशुओं का पालन एवं उत्पादन प्रक्रियाओं में जैविक विविधता एवं प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में विविधता बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए चारागाहों में विभिन्न प्रकार के पौधों की प्रजातियाँ पोषक तत्वों से भरपूर चारे का विकल्प सुनिश्चित करती हैं जो सीधे पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता को बढ़ाते हैं। इसके अलावा जैव विविधता से भरपूर पारिस्थितिक तंत्रों में प्राकृतिक कीट नियंत्रण होता है, जिससे रासायनिक हस्तक्षेप की आवश्यकता कम हो जाती है। भारत के पश्चिमी घाट जैसे क्षेत्रों में पारंपरिक पशुधन प्रणालियों ने विविध वनस्पतियों और जीवों को

शामिल कर जलवायु संकटों और रोगों की रोकथाम के प्रति उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है।

फलतः पशुधन की जैव विविधता एवं पशुपालन कार्यों में विविधता कृषि उपयोग के अन्तर्गत वृहत भू-क्षेत्रों में ऐसी प्रणालियाँ वहां बेहतर पारिस्थितिकीय संतुलन बरकरार रखने में सहायक होती हैं।

इस संदर्भ में यह भी पाया गया है कि कृषि उत्पादन, पशुपालन तथा मतस्यपालन में बेहतर पारिस्थितिकीय संतुलन के लिये स्थानीय प्रजातियों, उप-प्रजातियों, उनके प्रभेदों एवं स्थानीय नस्लों का भी अपना विशेष महत्व है। इन स्थानीय किस्मों के पशुधन मे से अच्छी गुणवत्ता वाले नस्लों का संरक्षण एवं उनका विकास भी किया जाना आवश्यक है। इस आलेख में आगे इसके विभिन्न पहलुओं की चर्चा की गयी है।

पशु चारे के संसाधन और जैव विविधता

विविध पारिस्थितिक तंत्र पशुधन के लिए चारे के रूप में काम आने वाली पौधों की प्रजातियों का समर्थन करते हैं। चारागाहों और कृषि प्रणालियों में जैव विविधता पोषण युक्त चारे की सतत आपूर्ति सुनिश्चित करती है। इसके अतिरिक्त, जैव विविधता एकल फसलों पर निर्भरता को कम करती है, जिससे कीटों, रोगों या चरम मौसम के कारण होने वाली फसल विफलता से जोखिम कम होता है।

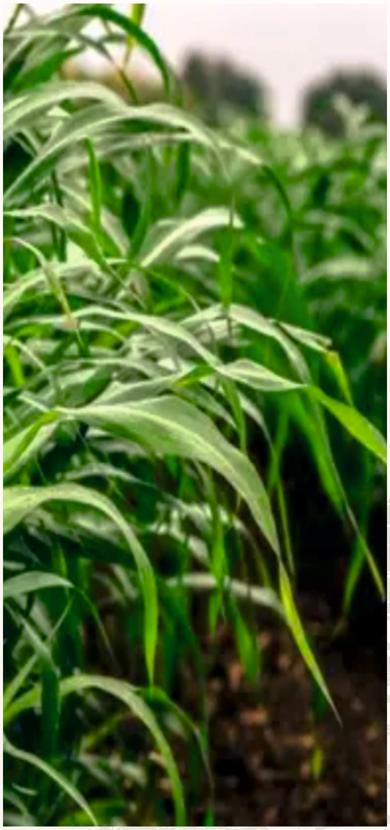

पर्यावरणीय लचीलापन

पशुधन की जैव विविधता पारिस्थितिक तंत्र की लचीलापन क्षमता को बढ़ाती हैं। फलतः पशुपालकों को सूखा और बाढ़ जैसे प्राकृतिक आपदाओं और बीमारियों के कारण पशुधन उत्पादन में कम आर्थिक क्षति होती है, और ऐसी आपदाओं से उबरने में पशुपालक ज्यादा सक्षम होते हैं।

जलवायु परिवर्तन में अनुकूलन की भूमिका

जलवायु परिवर्तन पशुधन उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है, जैसे अत्यधिक गर्मी के मौसम में तनाव, अत्यधिक शुष्क मौसम में पानी की कमी, और रोगों के स्वरूप में बदलाव। जैव विविधता इन चुनौतियों का एक प्राकृतिक समाधान प्रदान करती है। इससे पशुओं के रोग प्रतिरोधी क्षमता में सुधार होता है तथा उनकी उत्पादकता दुष्प्रभावित नहीं होती है।

आर्थिक लाभ

स्थानीय चारे के संसाधनों और रोग प्रतिरोधक पशुधन नस्लों का उपयोग उत्पादन लागत को कम कर सकता है, और मुनाफा बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह लागत खर्च में कमी के साथ-साथ उत्पादकता वृद्धि में सहायक होता है। जैव विविधता पर आधारित कुछ ऐसी पशुधन प्रबंधन की प्रणालियाँ लागत और लाभ के मामले में ज्यादा व्यावहारिक होती हैं।

2. पशुधन जैव विविधताः राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

भारत अपनी समृद्ध पशुधन जैव विविधता के लिए विश्व प्रसिद्ध है, जो देश की कृषि विरासत, संस्कृति, और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गहराई से जुड़ी हुई है। भारत में पशुधन की विविधता कृषि-जलवायु क्षेत्रों, पारंपरिक प्रथाओं, और ग्रामीण समुदायों की सहनशीलता को दर्शाती है। विश्व में सबसे बड़े पशुधन आबादी वाले देशों में से एक होने के कारण, भारत के पास पशु आनुवंशिक संसाधनों का एक महत्वपूर्ण भंडार है, जो सतत् संवहनीय कृषि प्रणाली और खाद्य सुरक्षा के लिए आवश्यक है।

पशुधन जैव विविधता का विवरण

भारत का पशुधन क्षेत्र कई प्रकार की प्रजातियों को शामिल करता है, जैसे कि गाय, भैंस, भेड़, बकरियां, सूअर, ऊंट, घोड़े, याक, मिथुन और पोल्ट्री। राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (NBAGR) के अनुसार, भारत में 212 से अधिक मान्यता प्राप्त स्वदेशी पशुधन नस्लें हैं, जिनमें निम्नांकित प्रमुख रूप से शामिल हैंः

- गायः गिर, साहिवाल, रेड सिंधी, और थारपारकर जैसी नस्लें, जो अपने दूध उत्पादन और स्थानीय परिस्थितियों की अनुकूलता के लिए जानी जाती हैं।
- भैंसः मुर्रा, नीली-रावि और जाफराबादी जैसी उच्च्य-दुग्ध उत्पादन नस्लें।
- भेड़ः शाहाबादी, मारवाड़ी, डक्कनी और गरोल जैसी स्वदेशी नस्लें, जो ऊन और मांस उत्पादन के लिए मूल्यवान हैं।
- बकरियांः मालाबारी, बीटल, और ब्लैक बंगाल जमनापारी, सीरोही जैसी नस्लें, जो मांस, दूध, और खाल के लिए अत्यधिक सराही जाती हैं।
- पोल्ट्रीः कड़कनाथ, वनराजा और असिल जैसी स्थानीय नस्लें, जो बीमारी प्रतिरोधकता और उच्च्य गुणवत्ता वाले मांस एवं अंडा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।
- ऊंट और अश्वः बिकानेरी ऊंट और मारवाड़ी घोड़े जैसी नस्लें, जो शुष्क क्षेत्रों में परिवहन और कृषि गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पशुधन जैव विविधता को खतरे

पशुधन जैव विविधता कई कारणों से खतरे में हैः

1. अव्यवस्थित क्रॉस ब्रीडिंगः उच्च्य उत्पादन वाली विदेशी नस्लों की प्राथमिकता अक्सर स्वदेशी नस्लों के आनुवंशिक पतन का कारण बनती है। विदेशी नस्लों के उपयोग की एकतरफा होड़ में स्थानीय नस्लों के लाभकारी विकास की उपेक्षा हुई है।

2. स्वदेशी नस्लों की उपेक्षाः जागरूकता और आर्थिक प्रोत्साहनों की कमी के कारण स्वदेशी नस्लों का कम उपयोग होता है, जिससे वे विलुप्त होने की कगार पर पहुंच जाती हैं।
3. उपयुक्त पर्यावास एवं आवास की क्षतिः चरागाह भूमि, वनों की कटाई, और शहरीकरण का विस्तार ने पारंपरिक पशुधन पालन प्रणालियों को प्रभावित किया है। अत्यधिक चराई के कारण प्राकृतिक चराई क्षेत्रों का काफी संकुचन हुआ है।
4. कृषि प्रथाओं में बदलावः मशीनीकरण और मिश्रित कृषि प्रणालियों से एकल फसल खेती में बदलाव ने कृषि गतिविधियों में पशुधन की भूमिका को कम किया है।
5. जलवायु परिवर्तनः बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा पैटर्न, और सूखे की बढ़ती आवृत्ति ने विशेष पारिस्थितिकी निचेस के लिए अनुकूलित नस्लों पर महत्वपूर्ण चुनौतियां उत्पन्न की हैं।
6. बाजार दबावः पशुधन उत्पादों के व्यावसायीकरण में अक्सर विदेशी या क्रॉसब्रीड पशुओं को प्राथमिकता दी जाती है।

पशुधन जैव विविधता संरक्षण के लिए रणनीतियाँ

- स्वदेशी नस्लों का संरक्षण : स्थानीय नस्लों को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के प्रयास वांछित हैं। इसके लिए स्थानीय नस्लों को वैज्ञानिक पद्धति द्वारा उत्क्रमित करने की प्रक्रिया जारी रखना आवश्यक है।
- सतत चराई प्रथाएँः चक्रिय (रोटेशनल) चराई की प्रणाली अपनायी जानी चाहिए। साथ ही विविध वनस्पतियों के चरागाहों को बनाए रखना आवश्यक है, जिससे लगातार घटते जा रहे चारागाह का बेहतर उपयोग किया जा सके।
- नीतियाँ और प्रोत्साहनः जैव विविधता-अनुकूल उत्पादन प्रणालियों, तकनीकों एवं खान-पान की शैली एवं अन्य प्रथाओं को बढ़ावा देने वाली नीतियाँ लागू करना।
- समुदाय की भागीदारीः स्थानीय समुदायों को जागरूक और सक्रिय रूप से शामिल करना।
- शोध और विकासः जैव विविधता और पशुधन उत्पादन के बीच अंतः क्रिया को समझने के लिए अनुसंधान में निवेश करना।

जैव विविधता सतत पशुधन प्रबंधन के लिए एक महत्वपूर्ण आधारशिला है। यह पारिस्थितिक तंत्र का लचीलापन, पशुधन की अनुकूलता और कृषि प्रणालियों की स्थिरता सुनिश्चित करती है। इसे संरक्षित करने में नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं, किसानों और समुदायों के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

जैव विविधता का संरक्षण और सतत पोषणीय उपयोग

पशुधन जैव विविधता के संरक्षण और सतत उपयोग के लिए भारत ने कई उपाय लागू किए हैंः

1. राष्ट्रीय पशुधन मिशन (NLM): यह मिशन पशुधन क्षेत्र के सतत विकास पर केंद्रित है और नस्ल सुधार कार्यक्रमों, क्षमता निर्माण, और वित्तीय समर्थन के माध्यम से स्वदेशी नस्लों के संरक्षण और प्रचार पर जोर देता है।
2. राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (NBAGR): यह स्वदेशी नस्लों की पहचान, दस्तावेजीकरण, और संरक्षण के लिए जिम्मेदार शीर्ष संस्था है। यह जर्मप्लाज्म के क्रायोप्रिजर्वेशन के लिए एक राष्ट्रीय जीन बैंक रखता है।
3. नस्ल पंजीकरण और दस्तावेजीकरणः नियमित नस्ल सर्वेक्षण और स्वदेशी नस्लों का पंजीकरण उनकी विशेषताओं और मूल्य के प्रति जागरूकता पैदा करता है।
4. संरक्षण परियोजनाएंः ''राष्ट्रीय गोकुल मिशन'' जैसे विशेष प्रयास स्वदेशी गाय नस्लों को बढ़ावा देते हैं।
5. पारंपरिक ज्ञान का उपयोगः पारंपरिक समुदायों द्वारा विकसित प्रथाएं, जैसे कि जड़ी-बूटियों का उपयोग, पशुधन जैव विविधता प्रबंधन में महत्वपूर्ण हैं।

भारत की पशुधन जैव विविधता एक अमूल्य राष्ट्रीय संपत्ति है, जो ग्रामीण आजीविका, पारिस्थितिक संतुलन और खाद्य सुरक्षा का समर्थन करती है। इसे संरक्षित करने और सतत रूप से उपयोग करने के लिए तत्काल ध्यान और कार्य की आवश्यकता है।

पारंपरिक ज्ञान, आधुनिक विज्ञान और सामुदायिक दृष्टिकोण को एकीकृत करके, भारत अपने समृद्ध पशुधन आनुवंशिक संसाधनों के संरक्ष्रण तथा सतत उपयोग की स्थिति तैयार करने में एक मिसाल कायम कर सकता है।

3. बिहार राज्य में पशुधन जैव विविधता

बिहार की सामाजिक- आर्थिक और पर्यावरणीय संरचना में पशुधन जैव विविधता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पूर्वी भारत में स्थित यह राज्य अपनी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है, जहां पशुपालन ग्रामीण जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। बिहार में पशुधन प्रजातियों की विविधता कृषि उत्पादकता, पोषण और ग्रामीण रोजगार में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

वस्तुतः बदलती कृषि प्रथाओं, जलवायु परिस्थितियों और बाजार की मांगों के कारण यह जैव विविधता कई चुनौतियों का सामना कर रही है। यहाँ बिहार में पशुधन जैव विविधता के महत्व, क्रॉसब्रीडिंग और स्वदेशी नस्लों की भूमिका और सतत संवहनीय विकास के लिए रणनीतियों की चर्चा की जा रही है।

बिहार राज्य में पशुधन जैव विविधता का महत्व

बिहार में पशुधन में गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर और कुक्कुट शामिल हैं। प्रत्येक प्रजाति और नस्ल में ऐसे विशेष लक्षण होते हैं जो उन्हें विशिष्ट पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक संदर्भों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। उदाहरण के लिए स्थानीय नस्लें जैसे पूर्णिया गाय स्थानीय परिस्थितियों के लिए अनुकूल हैं और कम लागत पर अधिक उत्पादकता एवं मुनाफा प्रदान करती हैं, जैसे दूध, मांस, श्रम शक्ति, और खाद।

बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुधन क्षेत्र एक महत्वपूर्ण घटक है। यह लाखों छोटे किसानों, भूमिहीन श्रमिकों और महिलाओं को रोजगार प्रदान करता है। विशेष रूप से डेयरी व्यवसाय, सहकारी नेटवर्क और सरकारी पहलों के समर्थन से एक प्रमुख आय सृजन गतिविधि के रूप में उभरा है। इसके अलावा, पशुधन दूध, मांस, और अंडे जैसे पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ प्रदान करके खाद्य सुरक्षा में योगदान देता है।

उत्पादकता बढ़ाने के लिए क्रॉसब्रीडिंग

बिहार में पशुधन उत्पादकता में सुधार के लिए क्रॉसब्रीडिंग को एक रणनीति के रूप में बढ़ावा दिया गया है। विदेशी नस्लों जैसे जर्सी और होल्स्टीन फ्रिज़ियन गायों को शामिल करने से दूध उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है। क्रॉसब्रीडिंग कार्यक्रमों का उद्देश्य विदेशी नस्लों की उच्च उत्पादकता विशेषताओं को स्वदेशी नस्लों की सहनशक्ति और अनुकूलनशीलता के साथ जोड़ना है।

हालांकि, क्रॉसब्रीडिंग के साथ चुनौतियां भी आती हैं। विदेशी नस्लों को गहन प्रबंधन की आवश्यकता होती है, जिसमें उच्च गुणवत्ता वाले चारे, पशु चिकित्सा देखभाल, और नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियाँ शामिल हैं। बिहार में, जहां अधिकांश पशुधन मालिक सीमित संसाधनों वाले छोटे किसान हैं, विदेशी या क्रॉसब्रीड पशुओं को बनाए रखना आर्थिक और प्रबंधन के दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसके अलावा, स्वदेशी नस्लों के अंधाधुंध क्रॉसब्रीडिंग से उनकी आनुवंशिक शुद्धता और सहनशीलता पर खतरा मंडराता है।

अतएव क्रॉसब्रिडिंग का प्रयोग करने में इन पहलुओं पर सावधानियाँ बरतने के साथ-साथ स्वदेशी नस्लों की अनुवांशिक शुद्धता को भी उपयुक्त रूप से संरक्षित करने की विशेष व्यवस्था आवश्यक है।

स्वदेशी नस्लें: वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता

बिहार के पशुधन क्षेत्र में सतत् विकास के लिए स्वदेशी नस्लें आधारशिला हैं। पूर्णिया गाय, गंगातीरी गाय, ब्लैक बंगाल बकरी और शहाबादी भेड़ जैसी नस्लें क्षेत्र की जलवायु परिस्थितियों, चारे के स्रोतों और कृषि प्रणालियों के लिए उपयुक्त हैं। ये नस्लें तगड़ी तथा बीमारियों से लड़ने में ज्यादा सक्षम होती हैं। साथ ही कम लागत की पशुपालन व्यवस्था के लिये भी ये उपयुक्त हैं। उनकी सहनशक्ति उन्हें जलवायु परिवर्तन और अन्य पर्यावरणीय तनावों का सामना करने में काफी उपयोगी संसाधन बनाती है।

उदाहरण के लिए, बिहार की मूल नस्ल पूर्णिया गाय मौसम में अतिशय परिस्थितियाँ एवं अप्रत्याशित परिवर्तन की परिस्थितियों को सहन करने और मोटे चारे पर जीवित रहने के लिए जानी जाती है। इसे मुख्य रूप से छोटे किसानों की खेती प्रणाली में श्रम

शक्ति के लिए उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार, ब्लैक बंगाल बकरी अपने उच्च गुणवत्ता वाले मांस और चमड़े के लिए प्रसिद्ध है, जो ग्रामीण परिवारों के लिए एक मूल्यवान संपत्ति है।

स्वदेशी नस्लें बिहार की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का भी हिस्सा हैं। ये पारंपरिक खेती प्रथाओं और ग्रामीण आजीविका में अभिन्न हैं। इन नस्लों का संरक्षण न केवल आनुवंशिक संसाधनों को संरक्षित करता है बल्कि सदियों से विकसित हुई कृषि प्रणालियों की स्थिरता भी सुनिश्चित करता है।

क्रॉसब्रीडिंग और स्वदेशी नस्लों के बीच संतुलन

बिहार के पशुधन क्षेत्र के सतत विकास के लिए क्रॉसब्रीडिंग और स्वदेशी नस्लों के संरक्षण के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। वैसे तो क्रॉसब्रीडिंग उत्पादकता बढ़ा सकती है परन्तु इसे सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए ताकि स्वदेशी नस्लों के आनुवंशिक लक्षणों का ह्रास न हो।

सतत पशुधन विकास के लिए आवश्यक रणनीतियाँ

बिहार में सतत् पशुधन विकास के लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई जानी चाहिएः

1. संरक्षण कार्यक्रमः स्वदेशी नस्लों की आनुवंशिक विविधता की सुरक्षा के लिए जीन बैंक, नस्ल रजिस्ट्रियां और संरक्षण फार्म स्थापित करना।
2. चयनात्मक प्रजननः स्वदेशी नस्लों में उत्पादकता बढ़ाने के लिए चयनात्मक प्रजनन कार्यक्रम लागू करना।
3. जागरूकता और प्रशिक्षणः किसानों को स्वदेशी नस्लों के लाभों और अंधाधुंध क्रॉसब्रीडिंग के खतरों के बारे में शिक्षित करना।
4. नीति समर्थनः स्वदेशी नस्लों के संरक्षण और उपयोग को प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ विकसित करना, जैसे स्वदेशी पशुधन खेती के लिए सब्सिडी।
5. अनुसंधान और विकासः उन्नत प्रजनन तकनीकों और प्रबंधन प्रथाओं के माध्यम से स्वदेशी नस्लों की उत्पादकता और अनुकूलनशीलता में सुधार के लिए अनुसंधान में निवेश करना।

पशुधन जैव विविधता के लिए चुनौतियाँ

पशुधन जैव विविधता के लिये खतरों और चुनौतियों की परिस्थितियां बिहार में भी कमोबेश देश में इस सम्बन्ध की समस्याओं के समरूप हैं।

- क्रॉसब्रीडिंग: विदेशी जर्मप्लाज्म के अनियंत्रित उपयोग ने स्थानीय नस्लों की आनुवंशिक शुद्धता को खतरे में डाल दिया है।
- उपयुक्त पर्यावास की कमी: चरागाह भूमि और जल संसाधनों की घटती उपलब्धता पारंपरिक पशुधन नस्लों के अस्तित्व को प्रभावित करती है।
- बाजार दबाव: उच्च उत्पादकता वाले पशुओं की मांग अक्सर स्वदेशी नस्लों के महत्व को दबा देती है।
- जलवायु परिवर्तन: बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा और मौसम में अतिशय परिस्थितियाँ एवं अप्रत्याशित परिवर्तन की घटनाएं पशुधन के स्वास्थ्य और उत्पादकता के लिए बड़े जोखिम पैदा करती हैं।
- कम जागरूकता: किसानों की बड़ी संख्या स्वदेशी पशुधन नस्लों के आर्थिक और पारिस्थितिक लाभों से अनभिज्ञ है।

राज्य में सतत् पशुधन विकास के लिए रणनीतियाँ

बिहार में पशुधन जैव विविधता के दीर्घकालिक संरक्षण अथवा स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ युक्तिसंगत हैं:

- समेकित पशुधन खेती: संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करने और अपशिष्ट को कम करने के लिए फसल और पशुधन खेती को जोड़ने वाली समेकित प्रणालियों को बढ़ावा देना।
- समुदाय आधारित संरक्षण: भागीदारी दृष्टिकोणों के माध्यम से स्वदेशी नस्लों के संरक्षण और प्रबंधन में स्थानीय समुदायों को शामिल करना।
- मूल्य संवर्धन: स्वदेशी पशुधन से मूल्यवर्धित उत्पादों का विकास, जैसे जैविक दूध, बकरी पनीर, और चमड़े के उत्पाद, जिससे बाजार की मांग और लाभप्रदता बढ़े।
- क्षमता निर्माण: किसानों को आधुनिक पशुधन प्रबंधन प्रथाओं में प्रशिक्षित करना, साथ ही जैव विविधता संरक्षण के महत्व पर जोर देना।
- जलवायु सहनीय प्रथाएँ: जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए उन्नत आश्रय डिज़ाइन और तनाव-सहनीय चारे की फसलों जैसी जलवायु-स्मार्ट पशुधन प्रथाओं को अपनाना।

पशुधन जैव विविधता बिहार के लिए एक महत्वपूर्ण संपत्ति है, जो कृषि उत्पादकता, ग्रामीण आजीविका, और पर्यावरणीय संतुलन में

योगदान करती है। जबकि क्रॉसब्रीडिंग उत्पादकता बढ़ाने के अवसर प्रदान करती है, स्वदेशी नस्लों का संरक्षण सतत् विकास के लिए अनिवार्य है। क्रॉसब्रीडिंग और स्वदेशी नस्लों की ताकतों को मिलाने वाला संतुलित दृष्टिकोण बिहार के पशुधन क्षेत्र की सहनशीलता और लाभप्रदता सुनिश्चित कर सकता है। अतएव क्रॉसब्रीडिंग तकनीक अपनाने के साथ-साथ उपयुक्त स्वदेशी नस्लों के संरक्षण एवं उनके विकास की संतुलित रणनीति ही उपयुक्त है।

संरक्षण कार्यक्रमों अनुसंधान, और किसानों को शिक्षित करने में निवेश करके बिहार अपनी समृद्ध पशुधन जैव विविधता को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित कर सकता है। यह न केवल ग्रामीण समुदायों की सामाजिक-आर्थिक भलाई को बढ़ाएगा बल्कि वैश्विक चुनौतियों का सामना करते हुए राज्य में सतत् पोषणीय विकास और संरक्षित पर्यावरण को सुनिश्चित करने में भी योगदान देगा।

देशी तकनीकों द्वारा पशु जैव विविधता का उपयोग और महत्व एवं संरक्षण

पशुधन उत्पादन में देशी तकनीकों का महत्व और उपयोगिता निम्नलिखित हैं:

महत्व

1. स्थानीय संसाधनों का उपयोगः देशी तकनीकें स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके पशुधन उत्पादन में मदद करती हैं।
2. कम लागत एवं अधिक उत्पादनः देशी तकनीकें कम लागत पर पशुधन उत्पादन में मदद करती हैं।
3. पर्यावरण अनुकूलताः देशी तकनीकें पर्यावरण अनुकूल होती हैं और पाशुधन उत्पादन में मदद करती हैं।
4. स्थानीय समुदायों की भागीदारीः देशी तकनीकें स्थानीय समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देती हैं।
5. जैव विविधता का संरक्षणः देशी तकनीकें जैव विविधता के संरक्षण में मदद करती हैं।
6. स्थानीय समुदायों की भागीदारीः देशी तकनीकें स्थानीय समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देती हैं।
7. पशुओं के लिए बेहतर जीवनः देशी तकनीकें पशुओं के लिए बेहतर जीवन प्रदान करती हैं।

उपयोगिता

1. पशुधन प्रबंधनः देशी तकनीकें पशुधन प्रबंधन में मदद करती हैं, जैसे कि पशुओं के लिए आहार और पानी की व्यवस्था।

2. पशुधन स्वास्थ्यः देशी तकनीकें पाशुधन स्वास्थ्य में मदद करती हैं, जैसे कि पशुओं के लिए प्राकृतिक दवाएं।

3. पशुधन उत्पादनः देशी तकनीकें पाशुधन उत्पादन में मदद करती हैं, जैसे कि पशुओं के लिए प्राकृतिक आहार।

4. पर्यावरण संरक्षणः देशी तकनीकें पर्यावरण संरक्षण में मदद करती हैं, जैसे कि पशुओं के लिए प्राकृतिक आवास की व्यवस्था तथा जल, जमीन, जलवायु तथा जंगलों के समेकित न्यून उपयोग कर उनका सरक्षण करना।

5. पशुओं का पालन-पोषणः देशी तकनीकें पशुओं के पालन-पोषण में मदद करती हैं, जैसे कि स्थानीय नस्लों का पालन-पोषण।

6. पशुओं से उत्पादः देशी तकनीकें पशुओं से उत्पाद प्राप्त करने में मदद करती हैं, जैसे कि दूध, मांस और ऊन।

7. पशुओं के लिए स्वास्थ्य सेवाएंः देशी तकनीकें पशुओं के लिए स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करती हैं, जैसे कि प्राकृतिक दवाएं और उपचार।

संरक्षण

1. पशु नस्लों का संरक्षणः देशी तकनीकें पशु नस्लों के संरक्षण में मदद करती हैं, जैसे कि स्थानीय नस्लों का पालन-पोषण।

2. पशुओं के लिए प्राकृतिक आवासः देशी तकनीकें पशुओं के लिए प्राकृतिक आवास की व्यवस्था करती हैं, जैसे कि पशुओं के लिए प्राकृतिक आश्रय।

3. पशुओं के लिए प्राकृतिक आहारः देशी तकनीकें पशुओं के लिए प्राकृतिक आहार की व्यवस्था करती हैं, जैसे कि घास, पत्तियां और अनाज।

उदाहरण

- पशुओं के लिए प्राकृतिक आहारः देशी तकनीकें पशुओं के लिए प्राकृतिक आहार की व्यवस्था करती हैं, जैसे कि घास, पत्तियां और अनाज।
- पशुओं के लिए प्राकृतिक दवाएंः देशी तकनीकें पशुओं के लिए प्राकृतिक दवाएं प्रदान करती हैं, जैसे कि आयुर्वेदिक दवाएं।
- पशुओं के लिए प्राकृतिक आवासः देशी तकनीकें पशुओं के लिए प्राकृतिक आवास की व्यवस्था करती हैं, जैसे कि पशुओं के लिए प्राकृतिक आश्रय।

4. पशुधन जैव विविधता के परिप्रेक्ष्य में सरकारी योजनाएँ

राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार द्वारा कई प्रकार की किसानोपयोगी योजनाऍ चलाई जा रही है, जिससे किसान एवं ग्रामीण युवा लाभावन्वित हो रहे हैं, साथ ही इन योजनाओं के माध्यम से पशुधन उत्पादन एवं पशु जैव विविधता को एक सार्थक दिशा भी मिल रही है।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन एवं राष्ट्रीय गोकुल मिशन

- छोटे जुगाली करने वाले पशु कुकुट और सूअर पालन क्षेत्र और चारा क्षेत्र में उद्यमिता विकास के माध्यम से रोजगार का सृजन। नस्ल सुधार के माध्यम से प्रति पशु उत्पादकता में वृद्धि।
- मॉस, अंडा, बकरी का दूध एवं ऊन और चारे के उत्पादन में वृद्धि
- चारा बीज के आपूर्ति को मजबूत करने और प्रमाणित चारा बीज की उपलब्धता के माध्यम से मांग को काफी हद तक पूरा करने के लिए चारे और फीड की उपलब्धता बढ़ाना।
- मांग आपूर्ति के अंतर को कम करने के लिए चारा प्रसंस्करण इकाइयों को प्रोत्साहित करना।
- किसानों के लिए पशुधन बीमा सहित जोखिम प्रबंधन उपायों को बढ़ावा देना।
- उत्पादन लागत को कम करने और पशुधन क्षेत्र के उत्पादन में सुधार के लिए कौशल आधारित प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकियों के प्रसार को बढ़ावा देना।
- राष्ट्रीय पशुधन मिशन की योजनाओं में अधिक्तम 50% कैपिटल सब्सीडी प्राप्त की जा सकती है।

समेकित मुर्गी विकास योजना

बिहार समेकित मुर्गी विकास योजना बिहार सरकार द्वारा शुरू की गई एक योजना है जिसका उद्देश्य राज्य में मुर्गी पालन को बढ़ावा देना और किसानों की आय में वृद्धि करना है। इस योजना के तहतए मुर्गी पालन इकाई स्थापित करने के लिए किसानों को अनुदान प्रदान किया जाता है।

पोल्ट्री फार्म लोन सब्सिडी

इस योजना में पोल्ट्री फार्म खोलने के लिए किसानों को ऋण पर सब्सिडी प्रदान की जाती है। इस योजना के कई लाभ हैं जिनमें से कुछ प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैंः

- कम ब्याज दर पर ऋण और सब्सिडी भी प्रदान की जाती है।
- मुर्गी पालन के आधुनिक तरीकों के बारे में प्रशिक्षण तथा तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है।
- पोल्ट्री उत्पादों के लिए बाजार उपलब्ध कराने में मदद की जाती है।

सूकर विकास योजना

इस योजना का मुख्य उद्देश्य राज्य में सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग - अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को सुअर पालन के माध्यम से स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना है। इसमें 80 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। इस योजना से न केवल लाभार्थी किसानों की आय बढ़ेगी बल्कि सुअर के मांस के रूप में पशु प्रोटीन की उपलब्धता भी बढ़ेगी।

बकरी पालन के बढ़ावा हेतु योजनाएँ

1. एकीकृत बकरी एवं भेड़ विकास योजना (आईजीएसडीएस)
   इस योजना के तहत चयनित परिवारों को प्रजनन योग्य बकरियां उपलब्ध कराई जाती हैं तथा बकरी पालन का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

2. प्रजनन योग्य बकरियों का वितरण
   इस योजना के तहत पात्र परिवारों को प्रजनन योग्य बकरियाँ प्रदान की जाती हैं। इस योजना का क्रियान्वयन जीविका द्वारा किया जाता है।

3. बकरी पालन इकाई हेतु सब्सिडी
   बकरी पालन इकाई के स्थापना की लिए 50-60% तक का अनुदान बाड़े के निर्माण, चारा-दाना आदि की व्यवस्था तथा बकरीयों की खरीद के लिए दिया जाता है। अनुदान प्राप्त करने के लिए संबंधित क्षेत्र में प्रशिक्षण अनिवार्य है।

5. सारांश

जैव विविधता से युक्त पशुधन प्रबंधन सर्वथा हितकारी है। देशी नस्लों के संरक्षण, विकास एवं विस्तार के लिये विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में सुनियोजित प्रयास वांछित हैं। सरकारी विभागों, अनुसंधान एवं शैक्षणिक संस्थानों तथा कृषि एवं पशुपालन में संलग्न समुदायों की सक्रिय सहभागिता से ही इसमें लक्षित सफलता मिल सकती है।

उच्च उत्पादकता के लिये बाह्य नस्लों एवं क्रॉस-ब्रीडस की पशुपालन पद्यति के साथ-साथ देशी एवं स्थानिक नस्लों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर संतुलित तथा संयोजित पशुपालन प्रणाली को प्रोत्साहित करना जरूरी हो गया है। इसके लिए देशी नस्लों का आनुवांशिक संरक्षण करना तथा उनके गुणों की वैज्ञानिक पद्धति तथा पारंपरिक ज्ञान के संयोजन से उत्क्रमण एवं प्रसार करना आवश्यक है। ऐसा करके ही सकल पशुपालन प्रक्षेत्र तथा समग्र कृषि तंत्र में जैव विविधता का युक्तिसंगत संरक्षण-संवर्धन किया जा सकता है।

बिहार राज्य में पशुपालन सेक्टर विभिन्न दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। यहां की खेती-बाड़ी की व्यवस्था में विविधतापूर्ण पशुधन के प्रबन्धन की परम्परा भी रही है। जैव विविधता क्षरण के चिंतनीय स्थिति में पशुधन की जैव विविधता का संरक्षण-संवर्धन आवश्यक है।

हाल के समय में केन्द्र सरकार एवं बिहार सरकार तथा इनके सम्बन्धित विभागों एवं शोध-संगठनों द्वारा संचालित कार्यक्रमों एवं योजनाओं में भी जैव विविधता के संरक्षण के अवयव संचालित है, एवं कुछेक योजनाओं में इन्हें विशेष रूप से प्रश्रय दिया जा रहा है। सरकारी एजेंसियों एवं किसानों, बाजार व्यवस्था तथा पशुपालन से जुड़े अन्य पक्षकारों के सक्रिय एवं समन्वित प्रयासों से राज्य में पशुधन जैव विविधता का संरक्षण-संवर्धन फलीभूत होगा।

पशुधन जैवविविधता

प्रबंधन एवं संरक्षण

जैवविविधता

बेहतर-संतुलन
स्वस्थ पारितंत्र - संरक्षित पर्यावरण
समृद्ध जीवन

समावेशी सहभागी विकास
Inclusive & Participatory Development

बेहतर जल एवं मिट्टी प्रबंधन
खाद्य उत्पादन सुरक्षा में सहायक
पोषण में संतुलन, स्वास्थ्य हेतु लाभप्रद
जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के समाधान में उपयोगी

पर्यावरण संरक्षण
ENVIRONMENT PROTECTION
परिस्थितिकीय संतुलन
ECOLOGICAL BALANCE

सतत पोषणीय विकास
SUSTAINABLE DEVELOPMENT

प्रकाशक:

बिहार राज्य जैव विविधता पर्षद्

(विविधता अधिनियम–2002 के अंतर्गत वैद्यानिक निकाय)

चतुर्थ तल, बिहार राज्य भवन निर्माण निगम लिमिटेड परिसर, शास्त्री नगर, पटना-800023

☎ 0612-2952412 bdbihar@bihar.gov.in https://bsbb.bihar.gov.in